ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 130-132

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास 'सामर्थ्य और सीमा' में प्रकृति की सामर्थ्य व मनुष्य की सीमाएँ

गौरव कुमार

सहायक अध्यापक, वरूण सिंह स्मारक जू0हा0 स्कूल, कुतुबपुर, मुजफरनगर (उ0प्र0) भारत

Received- 08.12.2019, Revised- 11.12.2019, Accepted - 14.12.2019 E-mail: tuktukdoll11@gmail.com

सारांश : *वैसे तुम चेतन हो, तुम प्रबुद्ध ज्ञानी हो, तुम समर्थ, तुम कर्त्ता, अतिशय अभिमानी हो।*
लेकिन अचरज इतना तुम कितने भोले हो, ऊपर से ठोस दिखो, अन्दर से पोले हो।
बनकर मिट जाने की एक तुम कहानी हो। – सामर्थ्य और सीमा

भगवतीचरण वर्मा हिन्दी साहित्य के जाने माने विख्यात उपन्यासकार है। उनके सभी उपन्यासों में एक विविधता देखने को मिलती है। उन्होंने हास्य, व्यंग्य, समाज, मनोविज्ञान और दर्शन सभी विषयों पर उपन्यास लिखे है। कवि और कथाकार होने के कारण वर्मा जी के उपन्यासों में भावनात्मक व बौद्धिकता का सामंजस्य मिलता है। आधुनिक हिन्दी उपन्यासकारों ने भगवतीचरण वर्मा का एक अहम् स्थान है क्योंकि उनकी कृतियों में रोचकता का तत्व सर्वोपरि रहता है।

कुंजी शब्द – उपन्यास, हास्य, व्यंग्य, समाज, मनोविज्ञान, दर्शन, बौद्धिकता, सामंजस्य, रोचकता, समन्वित, कृति।

अक्खड़ और स्पष्टवादिता का समन्वित व्यक्तित्व लेखक वर्मा जी हिन्दी–साहित्य में कवि, कथाकार, नाटककार, सम्पादक, फिल्मी, सिनेमा, लेखक आदि विविध रूपों से प्रख्यात हुए परन्तु सर्वाधिक प्रसिद्धि कथाकार के रूप में ही हुई। उनकी सफल और यशस्विनी कृतियाँ स्वयं इसका प्रमाण हैं, जिनमें वर्मा जी का भव्य स्वाभिमानी व्यक्तित्व पूर्णिमा की चन्द्र–ज्योत्स्ना–सा झलकता दिखाई देता है। डॉ० वेद प्रकाश शास्त्री के शब्दों में– ''बहुमुखी प्रतिभा के धनी तथा बहुमुखी परन्तु स्वाभिमानी व्यक्तित्व के स्वामी भगवती बाबू का व्यक्तित्व उनके अपने उपन्यासों में बहुमुख होकर प्रकट हुआ है। कभी वे दर्शनपरक है तो कभी अर्थशास्त्रपरक, कहीं मानवतावादी हैं तो कहीं परिस्थितिवादी, कहीं सफल प्रेमी है तो कहीं सफल राजनीतिज्ञ, कहीं संवेदनशील साहित्यकार तो कहीं कलम के सिपाही, मानवता के रक्षक।''

वर्मा जी ने अपने दौर में ऐसे विषयों पर कलम चलाई जिन पर लिखना उस समय बहुत साहस का काम समझा जाता था। 'सबहिं नचावत राम गोसाई' की विषय वस्तु आजादी के बाद भारत में कस्बाई मध्य वर्ग की महत्त्वकांक्षाओं के विस्तार व उनके प्रतिफलन पर रोचक कथासूत्रों के माध्यम से प्रकाश डालती है। 'प्रश्न और मरीचिका' में वर्मा जी ने भारत के निकट अतीत के इतिहास को कथा के माध्यम से प्रस्तुत – विश्लेषित करने का एक साहसपूर्ण प्रयोग किया है। इस उपन्यास में लखेक ने जिस ज्वलंत प्रश्न को वाणी दी है वह आज हर भारतीय के मन में घुमड़ रहा है। वह प्रश्न है कि क्यों अपनी अगाध जन–शक्ति और प्रचुर भौतिक साधनों के होते हुए भी भारत एक शक्तिशाली देश नहीं बन पाया। वर्मा जी ने गहराई में जाकर इस समस्या का कारण भी खोज निकाला है और निष्कर्ष दिया है – हर और फैले स्वार्थ और भ्रष्टाचार को देखते हुए भी जो लोग यह आशा करते हैं कि कोई स्वच्छ शासन–तंत्र देश को पुनरूत्थान की ओर ले जाएगा, वे मरीचिका के पीछे भटक रहे हैं।

वर्मा जी का बहुचर्चित उपन्यास सामर्थ्य और सीमा (1962) में प्रकाशित हुआ। इस उपयास में उन्होंने मनुष्य व प्रकृति के मध्य स्थापित सम्बन्ध को अपने समर्थ किन्तु अपनी सीमाओं के प्रति अनभिज्ञ पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। मनुष्य समर्थ है और समझता है कि इस सामर्थ्य को स्त्रोत वही है और वही इसका उपार्जन करता है। मनुष्य केवल अपने सामर्थ्य को ही देखता है, अपनी सीमाओं को नहीं। 'सामर्थ्य और सीमा' अपने सामर्थ्य की अनुभूति से पूर्ण कुछ ऐसे विशिष्ट व्यक्तियों की कहानी है जिन्हें परिस्थितियाँ एक स्थान पर एकत्रित कर देती है। हर व्यक्ति अपनी महत्ता, अपनी शक्ति और सामर्थ्य से सुपरिचित था, प्रत्येक को अपने पर अटूट विश्वास था लेकिन वे सभी प्रकृति की शक्तियों से अनभिज्ञ थे जो इनके इस दर्प को चकनाचूर करने को तैयार हो रही थी।

सत्य की खोज में सामान्यतया विज्ञान और आध्यात्म को एक दूसरे से भिन्न माना जाता है। दोनों का ही आधार स्तम्भ जिज्ञासा है। प्राचीन समय के जगत में इन दोनों प्रकार के ज्ञान में कोई संघर्ष नहीं था। मनुष्य का स्वयं के विषय में ज्ञान और ब्रह्माण्ड के विषय में ज्ञान, एक दूसरे के पूरक थे और ये ज्ञान मनुष्य का सृष्टि के साथ एक सुदृढ़ और स्वस्थ सम्बन्ध बनाने का आधार था। प्रकृति के साथ सम्बन्ध हमारे अनुभव की सर्वप्रथम और सबसे महत्वपूर्ण परत है। मनुष्य की मानसिकता के साथ प्रकृति

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

का एक गहरा रिश्ता है। प्राचीन समय की सभ्यताओं में प्रकृति को सम्मान के भाव से देखा गया है। आज के जगत में मनुष्य लालचवश, जल्द लाभ व जल्द नतीजे प्राप्त करना चाहता है। इसी कारण आज का मानव प्रकृति को नियंत्रित कर उसे अपना दास बनाना चाहता है, जो उसके लिए विनाशकारी साबित हो रहा है।

'सामर्थ्य और सीमा' भगवती बाबू की प्रौढ़तम् रचना है। इस कृति में उपन्यास के सभी तत्वों का समावेश हुआ है। उपन्यास कथानक के माध्यम से केवल लोक–मनोरंजन का साधन मात्र नहीं है। वरन् उपन्यास में कथाकार के विचारों एवं उद्देश्यों का समुचित सामंजस्य होता है। इस उपन्यास में वर्मा जी मात्र किस्सा गोई के द्वारा घटनाओं को जोड़कर कथानक को सरसता प्रदान करने का लक्ष्य नहीं रखते अपितु अपने विचार एवं चिन्तन का प्रक्षेपण करना चाहते है। 'सामर्थ्य और सीमा' लेखक के जीवन दर्शन की श्रेष्ठतम कृति है। यदि 'चित्रलेखा' व्यक्तिवादी घोषणा पत्र है तो 'सामर्थ्य और सीमा' को हिन्दी का नियतिवादी घोषणा पत्र कह सकते है।

मनुष्य इस भ्रम में है कि प्रकृति उसके वश में है तथा वह उसे जो चाहे वह रूप दे सकता है। इन पाँचों व्यक्तियों के माध्यम से वर्मा जी ने मनुष्य की विभिन्न क्षेत्रों में विजय को दर्शाया है। ये पाँचों व्यक्ति अपने–अपने क्षेत्र के महारथी है। 'रतनचन्द्र मकोला' हिन्दुस्तान के उन उद्योगपतियो में से हैं जिनके इशारे पर सरकारें बनती–बिगड़ती है – ''रतनचन्द्र मकोला दर्शनशास्त्र से उतना ही दूर थे, जितनी दूर आज का राजनीतिक नेता सत्य से है। फिर भी रतनचन्द्र मकोला शक्ल से ठीक उस तरह दार्शनिक दिखते थे जितना आज का राजनीतिक नेता सत्यवादी दिखता है।

हर कदम पर सफलता, हर स्थान पर आदर और सम्मान। दुनिया के अधिकांश देशों के उद्योगपति और व्यापारी भारत के उद्योगपति मकोला के नाम से परिचित थे। देश की सरकार को बनाने और बिगाड़ने की क्षमता समझी जाती थी उनमें।''

दूसरा पात्र वासुदेव चिन्तामणि देवलंकर है जो विश्वविख्यात इंजीनियर है – ''देवलंकर विश्व ख्याति के इंजीनियर थे। बड़े से बड़े विदेशी इंजीनियर बाँध–निर्माण के कार्य में देवलंकर का लोहा मानते थे।''

तीसरा पात्र सुप्रसिद्ध दैनिक समाचार पत्र 'रिपब्लिक' का प्रधान सम्पादक ज्ञानेश्वर राव है। इनकी राय व लेखनी बेजोड़ समझी जाती है – ''रिपब्लिक का हिन्दुस्तान में ही नहीं, विदेशों में भी बहुत माना था। अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर 'रिपब्लिक' के लेख दुनिया–भर में बड़े ध्यान से पढ़े जाते थे।''

चौथे व्यक्ति है पण्डित शिवानन्द शर्मा। शर्मा जी उच्च कोटि के साहित्यकार होने के साथ ही संसद सदस्य भी है। पाँचवे व्यक्ति हैं – सफल आर्किटेक्ट एलबर्ट किशन मन्सूर। सरकार का कोई भी काम इनके बिना नहीं चलता। ये पाँचों सामर्थ्यवान व्यक्ति उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री जोखन लाल के विशेष आमंत्रण पर सुमनपुर के विकास की संभावनाओं का पता लगाने आए हैं।

सुमनपुर पहाड़ी क्षेत्र में बसा प्रकृति के सौन्दर्य से भरपूर एक छोटा–सा क्षेत्र है जिसे मानव अपनी पहुँच में लाना चाहता है। ये सभी पाँचों व्यक्ति जो मानव के ज्ञान–विज्ञान के द्योतक हैं अपनी–अपनी विधाओं का प्रदर्शन करके यशनगर की विधवा रानी मानकुमारी का विश्वास व प्रेम जीतना चाहते है। रानी मानकुमारी की आर्थिक स्थिति निरन्तर गिर रही थी तथा वह भी चाहती थी कि उसे उसकी जमीन का अधिक से अधिक मुआवजा मिल जाए। सभी लोग रानी मानकुमारी की गिरती हुई आर्थिक स्थिति पर कृत्रिम सहानुभूति व्यक्त करते हैं तथा चाहते हैं कि विकस के लिए अधिगृहीत होने वाले रानी के बंगलों का मुआवजा उन्हीं के माध्यम से तय हो।

रानी मानकुमारी भी मानवीय कमजोरियों का शिकार होती है। उनमें अन्दर से विगत सुखमय जीवन को पुनः जीने की प्रबल इच्छा जगती है। इंजीनियर देवलंकर तो रानी से विवाह का प्रस्ताव भी रखते हैं। उद्योगपति मकोला उन्हें अपनी कम्पनी का मैनेजिंग डायरेक्टर बनाना चाहते है। शर्मा जी को रानी में छिपी साहित्यिक प्रतिभा दिखाई देती है। वे उस प्रतिभा को प्रकाश में लाने का वचन देते हैं। एलबर्ट उन्हें सांस्कृतिक मण्डल का सदस्य बनाकर विदेश घूमने के लिए आमंत्रित करते है। ज्ञानेश्वर राव उन्हें राजनैतिक क्षितिज पर स्थापित करने का वचन देते हैं – ''यह तो बड़ा अन्याय हो रहा है आपके साथ। अगर यहाँ यह नहीं होता तो आप मेरे साथ दिल्ली चले। मैं आपको प्राइम मिनिस्टर से मिलवाकर आपका मामला सुलझवा दूँगा।''

रानी मानकुमारी को जीवन के परिवर्तन का पूर्वाभास मिलता है। रानी के श्वसुर मेजर नाहर सिंह उन लोगों द्वारा सुझाए गए प्रस्तावों से प्रसन्न होते है किन्तु इन लोगों द्वारा विकास की जो योजनाएँ बनाई जा रही थी उनके प्रति शंकालु है। उनके मन में अर्न्तद्वन्द्व चल रहा था – ''मानव–जीवन ही संघर्ष का है, इस संघर्ष में कभी एक पक्ष जीतता है, कभी दूसरा पक्ष जीतता है। हमारे हाथ में कुछ भी नहीं है, काल व परिस्थिति के चक्र में हम घूम रहे हैं। यह संघर्ष अनादि काल से चला आ रहा है अनन्त काल

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

तक चलता रहेगा।''

मेजर नाहर सिंह रोहिणी नदी के तीव्र प्रवाह में पहाड़ के टूट कर गिरने के साथ ही नदी के जल के कम हो जाने से भावी अशुभ की कल्पना करने लगते हैं। चिन्तित होकर मेजर नाहर सिंह ने पूछा ''इंजीनियर साहब कितना समय लगेगा इस झील के भरे में?''

एक दिन अप्रत्याशित घटना घटती है। अतिथिगण रानी मानकुमारी के जन्मदिन पर आयोजित प्रीतिभोज के बाद अपने विश्राम स्थल पर जाने की बात सोच रहे थे, सभी अपनी–अपनी योजनाओं में निमग्न थे। उसी समय आकस्मिक तेज वर्षा के कारण रोहिणी का पानी भीषण बाढ़ के रूप में यशनगर में घुसता है। सभी लोग भागना चाहते है किन्तु मृत्यु के सामने आत्मसमर्पण कर देते हैं – ''नहीं बचोगे! तुम लोगों की मृत्यु तुम्हें इस अभिशप्त प्रदेश में खींच लाई है। देख रहे हो, पानी वह आ रहा है।''

मेजर नाहर सिंह व मानकुमारी महल के ऊपर चढ़ जाते हैं, उन्हें अपने जीवन के प्रति एक आशा है कि जब वर्षा रूकेगी तो पानी का स्तर धीरे–धीरे कम हो जाएगा परन्तु वास्तविकता इसके विपरीत थी – ''एकाएक रानी मानकुमारी चीख उठी, कक्काजी, पानी यहाँ भी आ पहुँचा है, मेजर नाहर सिंह ने रानी मानकुमारी का हाथ पकड़ा तिमंजिलें पर चलो रानी बहू, अभी तो हम लोगों को लड़ते रहना है इस मृत्यु से, जब तक हो सके तब तक अपनी रक्षा करनी है।''

'सामर्थ्य और सीमा' उपन्यास में कथानक का कारूणिक अन्त मानवीय शक्ति पर प्राकृतिक शक्ति की विजय सिद्ध करती है। यह उपन्यास चिन्तन प्रधान है। पूरा उपन्यास मनुष्य के अहम् और प्रकृति की शक्ति के बीच होने वाले संघर्ष को रूपायित करता है। प्रस्तुत उपन्यास में मेजर नाहर सिंह ही प्रकृति की शक्ति व मानव की सीमाओं, कमजोरियों के प्रति यथार्थपरक सोच रखते हैं। उपन्यास के अन्य प्रमुख पाँचों पात्र, मेजर नाहर सिंह की प्रकृति के प्रति संवेदना तथा गम्भीरता का उपहास उड़ाते हैं। वे सब अपने–अपने ज्ञान के अहम में भूल जाते है कि उनका निर्माण प्रकृति के पाँचों तत्वों से मिलकर हुआ है फिर वे कैसे प्रकृति पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। मेजर नाहर सिंह उन्हें इस विषय में सचेत करते हुए कहते हैं कि – ''प्रकृति पर तुम विजय पा सकते हो इंजीनियर साहब! जिन पंचतत्वों से तुम्हारा शरीर निर्माण हुआ है, जिन पंचतत्वों पर तुम्हारी स्थापना है, उन्हीं पर तुम विजय पाने चले हो? नहीं इंजीनियर साहब! झुको, झुको! मनुष्य का यह भ्रम है कि वह लेता है, सत्य तो यह है कि वह पाता–भर है और तुममे इतनी सामर्थ्य कहाँ है कि तुम ले सको। प्रकृति तो मुक्त हस्त बाँटती है धन–धान्य, वह तुम्हें सक्षम होकर सब कुछ देती है।''

आज का मनुष्य वैज्ञानिक तरीकों व नए अनुसंधानों से दुर्जेय प्रकृति पर विजय पाने का अनवरत् प्रयास कर रहा है। नदियों के बाढ़ की विभीषिका को बाँधों के द्वारा रोककर अपनी शक्तिमत्ता सिद्ध कर रहा है। आज का मनुष्य स्वयं को प्रकृति का स्वामी मान रहा है। वर्मा जी प्रकृति की सामर्थ्य व महानता के पक्षधर है। प्रकृति में केवल सामर्थ्य ही सामर्थ्य है, उसकी सीमाएँ नहीं है। प्रकृति अनियंत्रित है यदि इसे नियंत्रित करने की कोशिश की जाती है तो यह अपना विकराल रूप दिखाती है। वर्मा जी इस उपन्यास में प्रकृति की शक्तिमती महानता को नाहर सिंह के माध्यम से व्यक्त करते हैं ''नहीं भाग सकोगे तुम! मृत्यु से कहीं कोई भाग सका है?''

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सामर्थ्य और सीमा, 1962 राजपाल एण्ड संस, दिल्ली 1973।
2. आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर, प्रथम संस्करण, अगस्त, 1961।
3. व्यक्तिवादी एवं नियतिवादी चेतना के संदर्भ में उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा, डॉ० रमाकान्त श्रीवास्तव, पृष्ठ 136।
4. सामर्थ्य और सीमा, पृष्ठ 9।
5. सामर्थ्य और सीमा, पृष्ठ 17।
6. सामर्थ्य और सीमा, पृष्ठ 21।
7. सामर्थ्य और सीमा, पृष्ठ 26।
8. सामर्थ्य और सीमा, पृष्ठ 118।
9. सामर्थ्य और सीमा, पृष्ठ 119।
10. सामर्थ्य और सीमा, पृष्ठ 253।
11. सामर्थ्य और सीमा, पृष्ठ 103।
12. सामर्थ्य और सीमा, पृष्ठ 311।
13. सामर्थ्य और सीमा, पृष्ठ 318।
14. सामर्थ्य और सीमा, पृष्ठ 266।

*****